



ईश्वरीय सेवा के साथी मनोहर इंद्रा दादी, गंगे दादी, रतनमोहिनी दादी, हृदयमोहिनी दादी, जानकी दादी, प्रकाशमणि दादी, निर्मलशांता दादी व चंद्रमणि दादी।



वे हरेक के स्वास्थ्य का ध्यान रखती थीं

मुझे दादीजी ने डिस्पेन्सरी में सेवा के लिए रखा। उस समय कुछ भाई-बहनें दादीजी को मुरली क्लास से पहले गुडमॉर्निंग करने जाते थे, मैं भी जाती थी, दादीजी मेरे से पूछते थे, कौन मधुबन निवासी बीमार है, उनको क्या तकलीफ है? मुझसे पूरा समाचार लेते थे, तो मुझे अच्छा लगता था कि दादीजी सभी का कितना ध्यान रखते हैं। हम कुछ बहनें रात्रि को भी दादी के पास जाते, दादीजी सोने से पहले मुरली ज़रूर

पढ़ते थे। दादीजी मुरली से कुछ-कुछ प्वाइंट्स सुनाते थे, साथ-साथ मम्मा-बाबा के साथ की हिस्ट्री भी सुनाते थे। हम बहनें कुछ प्रश्न पूछते थे तो दादी हमको प्रश्नों के ज्ञानयुक्त उत्तर देकर संतुष्ट करते थे, लेकिन इस पालना से मुझे विशेष नशा और खुशी अनुभव होता था और मुझे लगता था कि बाबा ने मुझे बड़ों की छत्रछाया अनुभव करने का विशेष भाग्य दिया है। जो भी समय सेवा में आती थी, वो सहज ही पार हो जाते थे। कई बार उस समय हॉस्पिटल नहीं होने के कारण मरीजों को पालनपुर या आवश्यकता होने पर अहमदाबाद गाड़ी से ले जाना पड़ता था। मैं उस समय इतनी

अनुभवी नहीं थी, फिर भी दादीजी ने कई बार मुझे निमित्त बनाकर पालनपुर एवं अहमदाबाद भेजा। दादीजी मुझपर इतना विश्वास करते हैं, ये मेरे आत्मविश्वास और हिम्मत को बढ़ा देता था और मेरे लिए मुश्किल होने पर भी मैं सहज कर लेती थी। एक बार मोहिनी दीदी को बुखार होने पर दादीजी ने उन्हें अहमदाबाद ले जाने की जिम्मेवारी मुझे सौंपी। दादी का विश्वास व उनके सरल व सहज व्यवहार ने मुझे आगे बढ़ाया। वे हर मरीज की जैसे डॉक्टर थीं। वे हरेक के स्वास्थ्य व उन्नति का ख्याल रखती थीं।



रायगडा-ओडिशा। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए आचार्य राजेन्द्र जी, पतंजलि योग गुरु, हरिद्वार। साथ हैं जगन्नाथ मोहनती, कलेक्टर एंड डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट, डॉ. सुरेन्द्र कुमार बेहेरा, जिला अध्यक्ष, पतंजलि योग समिति व ब.कु. श्रीमती।



इलाहाबाद। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए बायें से ब.कु. सुषमा, स्वामी विद्यानंद, सच्चा आश्रम, डॉ. ए.वी. वानडे, डायरेक्टर, कॉलेज हॉस्पिटल, ब.कु. कमल, ब.कु. मनोरमा व डॉ. अन्नू गुप्ता, रोटरी प्रेसीडेंट।



वरनाला-पंजाब। आध्यात्मिक कार्यक्रम के दौरान दीप प्रज्वलित करते हुए राजपाल शर्मा, मैनेजर, श्री शांति सिरप, डॉ. त्रिलोकी जी, प्रो. प्रेम शर्मा, चरणजीत मित्तल, प्रिन्सिपल, सेन्ट्रल हाई स्कूल, एयरफोर्स, ब.कु. डॉ. प्रो. सीमा, ब.कु. ब्रिज बहन व अन्य।



वीरगंज-नेपाल। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित 'स्वस्थ एवं सुखी समाज हेतु राजयोग का महत्व' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए भारतीय महावाणिज्य राजदूत अन्नू जी, ब.कु. रविणा, ब.कु. बेली, रेडक्रॉस की पूर्व अध्यक्षा मधु राणा व समाजसेवी उषा शाह।



उज्जैन। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित 'राजयोग मेडिटेशन' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब.कु. उषा दीदी, ब.कु. निरुपमा व म.प्र. के शिक्षामंत्री पारस जैन।



आगरा-कमला नगर। आगरा कॉलेज के ग्राउण्ड में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में उपस्थित हैं सर्वधर्म के प्रतिनिधि तथा अन्य समाजसेवी संगठन के प्रतिनिधियों के साथ ब.कु. शशि।

सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरुषार्थ

स्वमान - मैं विजयी रत्न हूँ।

हम ही विजयी थे, हम ही विजयी हैं और हर कल्प हम ही विजयी बनते रहेंगे...।

योगाभ्यास - अ. बापदादा वतन में विजय का तिलक देते हुए मुझे वरदान दे रहे हैं, विजयी भव...विजयी भव मेरे बच्चे।

ब. बाबा, प्रकृति, भक्तात्माएं व समय विजयमाला लिये मेरा इंतज़ार कर रहे हैं।

स. बापदादा मेरे सामने हैं और उनके वरद हस्तों से विजयमाला निकलकर मेरे गले में पड़ती जा रही है... बाबा मुस्कराते हुए कह रहे हैं, बच्चे, तत्त्वम...तत्त्वम... तत्त्वम...।

धारणा - मांगने के संस्कार का परिवर्तन।

शिव भगवानुवाच - तुम दादा के बच्चे हो। तुम्हें किसी के आगे हाथ फैलाने की ज़रूरत नहीं है। तुम अपने श्रेष्ठ स्वमान के आसन पर विराजमान रहो, तो सारे संसार के सुख-सुविधा के साधन और सम्पदा स्वतः तुम्हारे चरणों में आ जायेंगे।

चिन्तन - व्यर्थ संकल्पों से क्या हानि है? व्यर्थ संकल्प चलने के क्या-क्या कारण हैं? संकल्प को व्यर्थ जाने से कैसे बचायें? व्यर्थ संकल्पों को किस-किस तरह समर्थ संकल्पों में बदलें?

तीव्र पुरुषार्थियों के प्रति - प्रिय आत्मन! संसार की चाहे कितनी भी बड़ी-बड़ी सम्पन्न आत्माएं हों, लेकिन आपके आगे वे सम्पन्न आत्माएं भी कुछ नहीं हैं, क्योंकि वे अविनाशी सुख-शान्ति के खज़ाने से खाली हैं और आप सदा अविनाशी खज़ानों से भरपूर हैं। आप कितने भाग्यशाली हैं जो स्वयं भाग्यविधाता भगवान ने भाग्य लिखने की कलम आपके हाथ में दे दी है। आप अपने श्रेष्ठ पुरुषार्थ और श्रेष्ठ कर्म से जितनी चाहे उतनी लंबी अपने भाग्य की लकीर खींच सकते हैं।

स्वमान - मैं आत्मा सारथी हूँ।

शिवभगवानुवाच - 'सदा योगयुक्त रहने की सरल विधि है - सदा अपने को 'सारथी और साक्षी' समझ चलना। आप सभी श्रेष्ठ आत्माएं इस देह रूपी रथ के सारथी हो। रथ को चलाने वाली आत्मा सारथी हो। यह स्मृति स्वतः ही इस रथ अथवा देह से न्यारा बना देती है। देहभान नहीं तो सहज योगयुक्त बन जाते और हर कर्म में योगयुक्त, युक्तियुक्त स्वतः ही हो जाते हैं। सारथी अर्थात् आत्म-अभिमान। क्योंकि आत्मा ही सारथी है। ब्रह्मा बाप ने इस विधि से नम्बरवन की सिद्धि प्राप्त की।'

योगयुक्त होने की विधि - 1. जैसे देह को अधीन कर शिवबाबा प्रवेश होते

अर्थात् सारथी बनते हैं, देह के अधीन नहीं बनते। इसलिए न्यारे और प्यारे हैं। ऐसे ही आप सभी ब्राह्मण आत्माएं भी बाप समान इस देह में स्थित होने का अनुभव करें... चलते-फिरते कर्म करते भी यह चेक करें कि मैं सारथी अर्थात् सर्व को चलाने वाली न्यारी और प्यारी स्थिति में स्थित हूँ. बीच-बीच में ये चेक करें। सारा दिन यदि यूँ ही बीत गया तो बीता हुआ समय सदा के लिए कमाई से गया। यह स्वतः नैचुरल संस्कार बनाओ। कौन-सा? चेकिंग का।

2. सारथी स्वतः ही साक्षी होकर कुछ भी करेंगे, देखेंगे, सुनेंगे... साक्षी बन देखने, सुनने, करने सबमें सब-कुछ

करते भी निलेप रहेंगे अर्थात् माया के लेप से न्यारे रहेंगे।

स्व-चेकिंग - 'सारथी' किसी भी कर्मन्द्रिय के वश नहीं हो सकते। माया के वार करने की विधि यही होती है कि कोई-न-कोई स्थूल कर्मन्द्रियों अथवा सूक्ष्म शक्तियाँ - 'मन-बुद्धि-संस्कार' के परवश बना देती है। आप सारथी आत्माओं को जो महामंत्र, वशीकरण मंत्र बाप से मिला हुआ है उसको परिवर्तन कर वशीकरण के बजाय वशीभूत बना देती है। एक बात में भी वशीभूत हुए तो सभी भूत प्रवेश हो जाते हैं। इसलिए सारथी पन का भान विस्मृत न हो...।